www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

*** Vol-2* *Issue-8* *August 2025***

विनोबा भावे एवं भूदान आन्दोलन

अंजन लकड़ा

रिसर्च स्कॉलर, राजनीति विज्ञान विभाग, विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हज़ारीबाग, झारखंड

सार

विनोबा भावे आधुनिक भारत के महान आध्यात्मिक नेताओं और सुधारकों में से एक थे, जिन्हें अनगिनत भारतीयों ने प्यार किया था। 1895 में जन्मे विनोबा ने दस साल की छोटी उम्र में आजीवन ब्रह्मचर्य और निस्वार्थ सेवा की शपथ ली। और फिर वे गांधी से मिले और स्वतंत्रता के लिए उनके संघर्ष में शामिल हो गए। 1940 में गांधी ने विनोबा को ब्रिटिश शासन के खिलाफ अहिंसक प्रतिरोध की पेशकश करने के लिए पहला सत्याग्रही चुना। विनोबा ने अन्य धर्मों का भी सम्मान किया और उनका अध्ययन किया। विनोबा का जीवन एक महान व्यक्ति की सद्भावना और अहिंसा के प्रति उनकी प्रतिबद्धता और प्रेम की शक्ति को दर्शाता है। भारत की आज़ादी के बाद जब गांधी के विचार लोगों की याददाश्त से फीके पड़ने लगे, तो विनोबा ने अपना "भूदान" आंदोलन शुरू किया। और बीस साल की अवधि में, उन्होंने पूरे भारत में पैदल यात्रा की। जमींदारों को अपनी ज़मीन ग़रीब लोगों को देने के लिए राजी किया और उन्होंने सफलतापूर्वक चार मिलियन ज़मीन ग़रीब लोगों में वितरित की। इस पत्र के अंतर्गत विनोबा भावे एवं भूदान आंदोलन पर विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य–शब्द: भूदान आंदोलन; जीवन दर्शन; लोकहितकारी चिंतन; गोधीवादी विचारधारा।

परिचय

भूदान आंदोलन या भूमि दान आंदोलन की शुरुआत और प्रेरणा विनोबा भावे ने 1951 में की थी। यह एक भूमि सुधार आंदोलन था। और इसने विनोबा को चर्चा में लाने में मदद की। 1951 में, दक्षिण भारत के हैदराबाद शहर से कुछ मील दक्षिण में शिवरामपाली नामक गाँव में तीसरा वार्षिक सर्वोदय सम्मेलन आयोजित किया गया था। विनोबा बैठक में भाग लेने के लिए निकले और तीन सौ मील पैदल चलकर हैदराबाद पहुँचे। उस समय तेलंगाना में कम्युनिस्ट विद्रोह चल रहा था। इस सेना ने धनी जमींदारों को खदेड़कर या उन्हें मारकर और उनकी जमीन वितरित करके उनके भूमि एकाधिकार को तोड़ने का प्रयास किया था। विनोबा ने सोचा था कि भविष्य में गांधी और मार्क्स के सिद्धांतों के बीच प्रतिस्पर्धा होगी। हैदराबाद में विनोबा और अन्य गांधीवादियों ने अहिंसा में अपने विश्वास का परीक्षण किया। 11 अप्रैल 1951 को, सम्मेलन के अंतिम दिन, विनोबा ने कहा कि वे तेलंगाना में उन क्षेत्रों का दौरा करेंगे जहां साम्यवाद चरम पर है। 18 अप्रैल 1951 को, भूदान आंदोलन की शुरुआत हुई, जब विनोबा ने नलगोंडा जिले में प्रवेश किया, जहां कम्युनिस्ट बल में थे। वहां उनका सामना स्थानीय भूमिहीन लोगों से हुआ और उन्होंने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। विनोबा ने हरिजन कॉलोनी का दौरा किया और बाद में हरिजन उनसे अस्सी एकड़ जमीन मांगने आए। तब विनोबा ने सुझाव दिया कि यह घटना, जिसकी न तो योजना बनाई गई थी और न ही इसकी कल्पना की गई थी, भूदान आंदोलन की शुरुआत थी और इसने विनोबा भावे को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि इस पद्धति का उपयोग भारत में गरीबी की सबसे बड़ी जड़ यानी भूमिहीन लोगों को हल करने के लिए किया जा सकता है। उन्होंने तर्क दिया कि भूमि एकाधिकार की जड़ लालच है। अगर लोगों के मन से लालच को निकाल दिया जाए, तो इससे गरीब लोगों का शोषण खत्म हो जाएगा। जैसा कि उन्होंने बाद में कहा, "हमारा उद्देश्य केवल दयालुता के कार्य करना नहीं है, बल्कि दयालुता का साम्राज्य बनाना है।" यह आंदोलन बाद में और अधिक क्रांतिकारी कार्यक्रम बन गया और ग्राम दान आंदोलन में बदल गया। यह आंदोलन एक व्यापक आंदोलन का हिस्सा था जिसके कारण भारत और भारत के बाहर दोनों जगह सर्वोदय समाज की स्थापना हुई। संयुक्त राज्य अमेरिका में, विनोबा पर प्रमुख लेख न्यूयॉर्क टाइम्स में छपे, न्यू यॉर्कर–विनोबा तो टाइम के कवर पर भी छपे। कुछ लोग तर्क देते हैं कि दान के रूप में दी गई भूमि अक्सर खराब गुणवत्ता वाली, बंजर, पथरीली और खेती योग्य नहीं होती है। लेकिन यह कहा जाता है कि किसी भी जमीन को बेकार नहीं कहा जा सकता। वे कहते थे कि भूमि की गुणवत्ता से ज़्यादा यह देखा जाना चाहिए

कि लोगों में अपनी संपत्ति सामाजिक उद्देश्य के लिए देने की इच्छा है या नहीं। और यही एक शक्तिशाली क्रांति का बीज है। और खराब गुणवत्ता वाली भूमि का उपयोग चारागाह, वनरोपण, विस्थापित लोगों के पुनर्वास के लिए किया जा सकता है।

साहित्य की समीक्षा

विनोबा भावे के भूदान संबंधि विचारों का अध्ययन करने के लिए उनके द्वारा लिखित किताबें प्राथमिक स्त्रोत हैं। उसमें से सबसे प्रमुख पुस्तक विनोबा, भूदान –यज्ञ1, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली है। इस पुस्तक में आचार्य विनोबा भावे के प्रवास –प्रवचन दिए गए है, जिनमें उन्होंनें भूमिदान –यज्ञ के उद्देश्य, महत्व और उसके व्यापक प्रभाव पर प्रकाश डाला है। साथ ही आचार्य विनोबा कौन है? और उनके अंदर कितनी गहरी शक्ति है इस संबंध में गांधीजी का एक लेख दिया गया है और आचार्य काका कालेकर का एक उपयोगी लेख है, जो इस अनुष्ठान के महत्व पर प्रकाश डालता है।

विनोबा भावे द्वारा लिखित पुस्तक सुलभ ग्रामदान2, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी, 1968 उनके भूदान और ग्रामदान से संबंधित विचारों का अध्ययन करने के दृष्टिकोण से अति महत्वपूर्ण है। इस पुस्तक में उन्होंनें ग्रामदान आंदोलन के व्यावहारिक पहलूओं की कई विचारणीय बातों पर प्रकाश डाला है।

विनोबा जी द्वारा रचित अन्य पुस्तक की श्रृंख्ला में तीसरी शक्ति3, नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, 1961 एक उपयोगी पुस्तक है। इस पुस्तक में विनोबा भावे ने तीसरी शक्ति की एक नई कल्पना की है, जिसका सैद्धांतिक प्रतिपादन तथा व्यावहारिक व्याख्या इस पुस्तक में संकलित उनके भाषणों में मिलती हे। वर्तमान सर्वोदय –विचार तथा आंदोलन को समझने के लिए यह पुस्तक काफी उपयोगी है। पुस्तक में जितने अध्याय है उनमें से एक का शीर्षक 'तीसरी शक्ति' है। किन्तु प्रत्येक में जो कुछ है वह इसी तीसरी शक्ति की अनेकमुखी व्याख्या है तथा उसको पैदा और पुष्ट करने की रीतियों का इसमें वर्णन है।

विनोबा भावे द्वारा लिखी गई अन्य पुस्तके जीवन –दृष्टि4, ग्राम सेवा मण्डल, वरघा, म0 प्र0, 1946, अनु0 कुन्दर बलवंत दिवाण, विचार पोथी, सत्साहित्य प्रकाशन, नई दिल्ली, अहिंसा की तलाश : विनोबा की जीवन –झांकी5, विनोबा के शब्दों में6, कालिन्दी, नई दिल्ली, सर्वोदय यात्रा7, भारत जैन महामण्डल, वर्धा, 1941, विनोबा के विचार8, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1946, गीता प्रवचन9, अखिल भारत सर्व –सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, काशी, 1947 आदि उनके राजनीतिक विचारों को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

रामगोपाल वर्मा द्वारा विनोबा भावे पर लिखी गई पुस्तक विनोबा भावे10, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015 एक महत्वपूर्ण है। प्रस्तुत पुस्तक में राष्ट्र – पुरूष संत विनोबा भावे के विलक्षण व्यक्तित्त्व और लोक –हितकारी आदर्शो का समावेश है। लेखक इसमे लिखते है – विनोबा गांधीजी की परंपरा में आते है। विनोबाजी का जीवन अपने आप में तो त्याग और तपस्या की प्रतिमूर्ति थी ही, उन्होंने देश के लोगों के हितों के लिए जो आंदोलन चलाए वे अपने आप में किसी चमत्कार से कम नहीं है। उनके भूदान आंदोलन ने देश के हजारों लोगों को भूमि दिलाकर जीने का साधन उपलब्ध कराया। इसी प्रकार 'सर्वोदय' आंदोलन के कारण विनोबा भावे की ख्याति चहुंओर फैली। एक व्यक्ति से संपत्ति का दान लेकर दूसरो को सौपना सचमुच चमत्कारी कदम था। जिसे देखने –समझने के लिए अनेक विदेशी लोग भारत आए। विनोबाजी के सेवा धर्म का उद्देश्य मानवता की सेवा करना था । संपूर्ण विश्व उनका सेवा क्षेत्र था। इसी आधार पर उन्होंनें अपने आपको 'विश्व मानव' और 'विश्व नागरिक' के रूप में स्थापित किया था। इसी धारणा के अनुरूप विनोबाजी ने व्यक्ति –व्यक्ति में कभी भेदभाव नहीं किया। किसी समूह वर्ग या राष्ट्र के प्रति अतिरिक्त निष्ठा रखते हुए विचार नहीं किया।

विनोबा भावे, मूव्ड बाए लवः द मेमोरिज् ऑफ विनोबा भावे11, ग्रीन बुक्स, नई दिल्ली, 1994 यह पुस्तक विनोबा भावे जैसे महान व्यक्ति के आंतरिक और बाहरी जीवन दोनो को प्रकट करती है, जो अहिंसा के 8 अभ्यास के प्रति एक आध्यात्मिक और प्रेम की शक्ति के प्रति अटूट प्रतिबद्धता रखते थे। अपने शिक्षक गांधी के आदर्शों और उदाहरण से प्रेरित होकर, विनोबा भावे ने पूरे भारत में गांव –गांव घूमते हुए 20 साल बिताए, अमीर जमींदारों को भूमिहीनों गरीबों को लाखों एकड़ जमीन देने के लिए राजी किया।

इसी तरह का प्रयास वंसत नरगोलकर द्वारा लिखी गई पुस्तक द क्रिड ऑफ संत विनोबा12, भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली, 1995 में किया गया। यह पुस्तक आचार्य विनोबा भावे के जीवन दर्शन की पड़ताल करती है। यह पुस्तक 1950 मे अपनी स्थापना के बाद से उनके भूदान आंदोलन का एक संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत करती हैं और सर्वोदय आंदोलन का भी वर्णन करती हैं, जो पूरे भारत में फैला था। आचार्य विनोबा भावे प्रचीन भारत की शिक्षा और परंपरा में डूबे हुए थे। उनका जीवन आध्यात्मिक ज्ञान और दर्शन और खोए हुए लोगो के लिए करूणा सीखने के सामंजस्यपूर्ण मिश्रण का प्रतिनिधित्व करता है। विनोबाजी ने स्वंय को जनता का सेवक बताया है। इसमें उनके जीवन और मिशन का पूर्ण विवरण प्राप्त होता है। एस0 नारायणस्वामी, ने आर्चाय विनोबा भावे –ए बायोग्राफिकल13 (इम्मोरटल लाइटस् सर्वस्) सपना बुक हाऊस, बेंगलौर, 2000 के नाम से प्रकाशित किया।

विनोबा भावे पर अनेक पुस्तके संपादित की गई है। जिसमें सी0पी0 शर्मा की पुस्तक विनोबा भावे : जीवन और दर्शन14, अभिधा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012 महत्वपूर्ण है। गांधीजी ने जिस तरह गांधीवाद का सहारा लेकर तात्कालिक समस्याओं को आध्यात्मिक विधि से सुलझाया, उसी प्रकार विनोबा ने भी गांधीवाद का सहारा लेकर तत्कालीन समस्याओं को सुलझाने का प्रयास किया। उनके संपूर्ण विचार आर्थिक समानता पर बदल देते थे। वह मानते थे कि समाज के प्रत्येक वर्ग को आर्थिक विकास के समान अवसर उपलब्ध होने चाहिए। विनोबा के भूदान यज्ञ का पूरा आंदोलन ही आर्थिक समानता की विचारध ाारा पर खड़ा है, इसमें निर्धन से निर्धन व्यक्ति को भी सम्मानपूर्वक एवं स्वाबलम्बी जीवन जीने का अवसर मिलता है।

इसी तरह का प्रयास सतीश कुमार ने अपनी पुस्तक इंटीमेंट एण्ड द अनइंटीमेंट15, ग्रीन बुक्स, नई दिल्ली, 1986 में किया है। यह पुस्तक विनोबा के भाषणो और लेखो का एक चयनित संकलन है। यह सत्य, अहिंसा और ज्ञान के सभी साध ाकों के लिए और उन लोगों के लिए अमूल्य मार्गदर्शक है, जो मात्रा से अधिक गुणवत्त और विखण्डन से अधिक पूर्णता को महत्व देते है।

विनोबा भावे के राजनीतिक परिघटना और उनके विचारों का अध्ययन करने महादेव देसाई का विनोबा के विचार16, सस्ता साहित्य मण्डल, प्रकाशन, 2008, गौतम बजाज, विनोबा दर्शन17, परंधाम प्रकाशन, पवनार, आचार्य विनोबा भावे18, पब्लिकेशन डिवीजन, मिनिस्ट्री ऑफ इनफोरमेशन एण्ड कम्युनिकेशन, नई दिल्ली, भारत सरकार, नन्द किशोर आचार्य, विनोबा के उद्धरणः साहित्य–चिंतन पर एकाग्र19, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2019 आदि महत्वपूर्ण है।

उद्देश्य

1. प्रस्तावित शोधकार्य का उद्देश्य संत विनोबा भावे के राजीतिक चिंतन की समझ को स्पष्ट करना है।
2. गांधीवादी नेता के रूप में उनके राजनीतिक विचारों का विश्लेषण करना।
3. भारत में आचार्य विनोबा भावे के भूदान आंदोलन के प्रभावों का अध्ययन करना।
4. विनोबा भावे के भूदान संबंधी विचारधारा को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारकों की समीक्षा करना।

शोध प्रविधि

आधुनिक भारत में विनोबा भावे के भूदान संबंधी विचार की प्रासंगिकता की पृष्ठभूमि तलाशने के लिए ऐतिहासिक पद्धति का प्रयोग किया गया है। इसके साथ ही साथ आचार्य विनोबा भावे के भूदान संबंधी विचारों का अध्ययन करने के लिए विश्लेषणात्मक पद्धति प्रयोग में लाई गई है। इस प्रकार प्रस्तुत शोधकार्य में ऐतिहासिक और विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

विश्लेषण

भूदान आंदोलन में उतार–चढ़ाव आए। विनोबा ने 1957 तक भूमिहीन लोगों के लिए पूरे भारत से पचास लाख एकड़ जमीन की मांग की। और इस तरह एक व्यक्तिगत आंदोलन एक जन आंदोलन बन गया। लेकिन इसका पतन 1971 में शुरू हुआ और यह अपने ही बोझ से ढह गया। और भूमि दान आंदोलन गांव दान या "ग्रामदान" में बदल गया। ग्रामदान में गांव के अधिकांश हिस्से को सभी गांवों के परिवारों के बीच समान रूप से जमीन के वितरण के पक्ष में ग्रामीणों द्वारा दान किया गया था। इस बीच भूमि दान अभी भी मौजूद था, लेकिन इसे उपेक्षित किया गया था। गिरावट का मुख्य कारण यह तथ्य था कि यह गैर–आदिवासी क्षेत्रों में लोकप्रिय नहीं था। अन्य कार्यक्रम भी थे जैसे सम्पत्तिदान (धन–उपहार), श्रमदान (श्रम–उपहार), जीवनदान (सहकर्मियों द्वारा आंदोलन के लिए आजीवन प्रतिबद्धता), साधनदान (कृषि कार्यों के लिए उपहार)। ऐसे सवाल थे कि सम्पत्तिदान, उदाहरण के लिए, भूदान के साथ ही क्यों शुरू नहीं किया गया था। भूदान के कारण भूमि प्राप्त करने वाले भूमिहीन लोग तब तक उस पर काम नहीं कर सकते जब तक उनके पास आवश्यक सामग्री न हो। लेकिन आचार्य जी ने कहा कि "वे शुरू से ही जानते थे, लेकिन उन्होंने उस सूत्र का पालन करना चुना जो कहता है कि 'जड़ पर ध्यान दो और बाकी सब अपने आप बढ़ जाएगा।' जैसा कि सभी जानते हैं कि मूल समस्या भूमि है। आंदोलन ने न केवल भूमिहीन लोगों को भूमि दिलाई बल्कि इसने गांधीवादी दर्शन में लोगों की रुचि जगाने में भी मदद की क्योंकि शिक्षित लोग उन विचारों को अनदेखा कर रहे थे या अप्रासंगिक मान रहे थे। इस आंदोलन से कई लोग प्रभावित हुए जिनमें प्रमुख थे जयप्रकाश नारायण, एक प्रसिद्ध मार्क्सवादी और एक समाजवादी। वे भारत की स्वतंत्रता से पहले और बाद में भी राजनीति में एक बड़े नेता थे। वे आंदोलन के करीब आए और महसूस किया कि यह एक बहुत अच्छा विचार था जिसका आधार गांधीवादी दर्शन था और उन्होंने अपना जीवन सर्वोदय समाज के लिए समर्पित कर दिया। आंदोलन न केवल भारतीयों का बल्कि विदेशियों का भी ध्यान आकर्षित कर रहा था। प्रसिद्ध अमेरिकी लुइस फिशर ने कहाः "ग्रामदान हाल के दिनों में पूर्व से आने वाला सबसे रचनात्मक विचार है"। अंग्रेजी कवि अल्फ्रेड टेनिसन के पोते हॉलम टेनिसन ने एक किताब लिखी, "द सेंट ऑन द मार्च" जिसमें उन्होंने ग्रामीण भारत में विनोबा भावे के साथ यात्रा करते हुए अपने अनुभव साझा किए। और भारत में अमेरिकी राजदूत चेस्टर बाउल्स ने अपनी पुस्तक, "शांति के आयाम" में कहाः "हमने 1955 में अनुभव किया, भूदान आंदोलन भारत में पुनर्जागरण का संदेश दे रहा है। यह साम्यवाद के लिए एक क्रांतिकारी विकल्प

प्रस्तुत करता है, क्योंकि यह मानवीय गरिमा पर आधारित है"। ब्रिटिश उद्योगपति अर्नेस्ट बार्डर भूदान आंदोलन से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने गांधीवादी अवधारणा को लागू किया और अपनी कंपनी का 90 प्रतिशत हिस्सा अपने औद्योगिक श्रमिकों को आवंटित किया। आर्थर कोस्टलर ने 1959 में लंदन ऑब्जर्वर में लिखा कि भूदान आंदोलन खुद को पश्चिमी विकास के नेहरूवादी मॉडल के विकल्प के रूप में पेश कर रहा था।

महापुरूषों की कीर्ति किसी एक युग तक ही सीमित नहीं रहती है। उनके लोकहितकारी चिन्तन कल्याणकारी होते है तथा युगों –युगों तक समाज का मार्गदर्शन करने का कार्य करते है। आचार्य विनोबा भावे, ऐसे ही प्रकाश स्तंभ है, जो एक महान संत, धर्मगुरू, महान विचारक, स्वतंत्रता सेनानी, लोकसेवक, समाज सुधारक, देशभक्त, सत्याग्रही तथा एक प्रसिद्ध गांधीवादी नेता थे। उनका मूल नाम विनायक नरहरी भावे था। उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन गरीबों और दबे –कुचले वर्ग को उनके अधिकार दिलाने के लिए समर्पित किया। उन्होंने अहिंसा और समानता के सिद्धांत का पालन किया। उनकी आध यात्मिक चेतना व्यक्ति और समाज से जुड़ी थी। इसी कारण एक संत स्वभाव होने के बावजूद उनमें राजनीतिक सक्रियता भी थी। उन्होंने समाजिक अन्याय और धार्मिक विषमता का मुकाबला करने के लिए, देश जनता को स्वंयसेवी होने का आह्वान किया। उन्हें गांधीजी का नैतिक एवं आध्यात्मिक उत्तराधिकारी माना जाता है। विनोबा जी की रचनात्मक तथा सामाजिक निर्माण की उपलब्धियां इतनी अधिक है कि उनके आकलन में गणित का प्रत्येक फार्मूला छोटा पड़ जाता हैं। उन्हें भारत के भूदान तथा सर्वोदय आन्दोलन के प्रणेता के रूप में जाना जाता है। सामुदायिक नेतृत्व के लिए उन्हें वर्ष 1958 में रमन मैसेसे पुरस्कार दिया गया। वह इस पुरस्कार से सम्मानित होने वाले प्रथम भारतीय नागरिक थे। वर्ष 1983 में उनके मरणोपरांत उन्हें देश के सर्वोच्चय नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

संत विनोबा भावे को महात्मा गांधी के सिद्धांत और विचारधाराओं ने काफी आकर्षित किया। उन्होंने गांधीजी को अपना राजनीतिक और आध्यात्मिक गुरू बनाने का फैसला किया। उन्होंने बगैर कोई प्रश्न उठाए गांधीजी के नेतृत्व को स्वीकारा। समय के साथ गांधीजी और विनोबा जी के मध्य संबंध गहरे होते गए। उन्होंनें महात्मा गांधी के साथ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में बढ़ –चढ़ के कार्य किया। उनके द्वारा प्रयोग में लाए गए विभिन्न राजनीतिक कार्यक्रम सत्याग्रह, गोनिषेध, खादी प्रचार, सर्वोदय, भूदान, ग्रामदान, हरिजनोद्धार, कुष्ठ सेवा आदि में गांधीजी के अंतः ज्योति के दर्शन होते है। उन्होंने सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य एवं सर्वधर्म समभाव को आत्मसात करके गांधी दर्शन को निरंतर अभिव्यक्ति प्रदान की। उन्होंने गांधीवादी दर्शन की सैद्धन्तिक एवं व्यवहारिक दोनों पहलुओं पर समान विचार किया। वे सैद्धांतिक क्षेत्र में गांधीवादी विचारध ारा की व्याख्या एवं स्पष्टीकरण शास्त्रीय ढंग से करते है तथा कही –कही पर गांधी की अहिंसा के आधार पर नई – नई अवधारणाओं का निर्माण भी करते है। व्यवहारिक रूप से ये गांधी की अहिंसा का प्रयोग देश में नये आर्थिक, राजनैतिक, एवं सामाजिक क्षेत्रों में करते है, जिसके परिणामस्वरूप भूदान, ग्रामदान, प्रखण्डदान, जिलादान जैसी धारणाएं आती है। वर्ष 1940 तक विनोबा भावे की पहचान केवल उनके इर्द –गिर्द रहने वालो तक ही सीमित थी। किन्तु 5 अक्टूबर, 1940 को महात्मा गांधी ने उनका परिचय राष्ट्र से करवाया। गांधीजी ने उन्हें प्रथम सत्याग्राही चुना।

30 जनवरी 1948 को गांधीजी की मृत्यु के पश्चात् विनोबा भावे के समक्ष नई जिम्मेदारियां उपस्थित थी। स्वतंत्र भारत में गांधीजी की विचारधारा को जीवित रखने के लिए उन्होंने अपरिग्रह अहिंसा सत्याग्राह खादी विचार समानभव सामाजिक परिवर्तन एवं सर्वोदय की नवीन व्यवस्था की इसी संदर्भ में उन्होनें गांधी दर्शन के तीन महत्वपर्णू विचार ट्रस्टीशिप, सत्याग्रह और सर्वोदय को अपने रचनात्मक प्रयोगों द्वारा क्रियान्वित किया। विनाबा जी ने गांधी जी के ट्रस्टीशिप विनियोग सामाजिक रचना के क्षेत्र में किया। भूदान आंदोलन ट्रस्टीशिप का महत्वपूण कदम है। यह जीवन शोधन की विस्तृत प्रकिया है जिसने साधनदान, संपतिदान, बुद्धिदान, श्रमदान, प्रेमदान, कूपदान एवं जीवनदान के विचार को समुन्नत किया। विनोबा भावे ने गांधीजी के मार्गदर्शन को स्वीकार किया एवं उनके मृत्यु के पश्चात् समाज सुधार एवं राष्ट्र निर्माण के लिए आजीवन उत्कृष्ट कार्य किया।

विनोबा भावे गीता से काफी प्रभावित थे। उनके विचार और प्रयास इस पवित्र पुस्तक के सिद्धांतों पर आधारित थे। उन्होंनें लोगों के बीच सादगी से जीवन व्यतीत करने और चकाचौंध से दूर रहने को बढ़ावा देने के उद्देश्य से कई आश्रम खोले। उन्होंने सन् 1959 में महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए ब्रह्म विद्या मंदिर की स्थापना की। उन्होंने गोवध पर कड़ा रूख आख्तियार किया। उन्होंने धमकी दी कि जब तक भारत में इस पर रोक नहीं लगाई जाती है, वह भूख हड़ताल पर चले जाएगें।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भी विनोबा भावे की महत्वपूर्ण भूमिका थी। उन्होंने असहयोग आंदोलन में सक्रिय सहभागिता निभाई। विदेशी वस्तुओं के प्रयोग के बजाय पर स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग पर विशेष बल दिया। वह स्वंय सूत कातते और दूसरो को भी सूत कातने को कहते। स्वाधीनता आंदोलन में उनकी सक्रिय भागीदारी से ब्रिटिश सरकार आक्रोशित हो गई। उन पर ब्रिटिश सरकार का विरोध करने का आरोप लगाया गया। उन्हें गिरफ्तार कर छः महीने के लिए जेल भेज दिया गया। उन्हें धुलिया जेल भेजा गया, जहां उन्होंने वहां के कैदियों को मराठी में 'भगवद्‌गीता' के विभिन्न विषयों को पढ़ाया। धुलिया जेल में उन्होंने गीता को लेकर जितने भी भाषण दिए, उन सभी भाषणों का संकलन कर बाद में एक किताब प्रकाशित

की गई।

आचार्य विनोबा भावे के राजनीतिक विचारों में अनोखी बात 'सर्वोदय' का विचार है। उन्होंने यह विचार गांधीजी से लिया तथा इसे नया नाम 'साम्ययोग' दिया। जिसका अर्थ सबका कल्याण अर्थात् सभी का उत्थान है। सर्वोदय के संबंध में विनोबा भावे कहते है कि सर्वोदय समाज की अवधारणा अनेक समस्याओं का समाधान है। वह सर्वोदय को एक क्रांतिकारी विचारध ाारा मानते थे न कि एक संगठन। वह स्पष्ट तौर पर कहते है कि पाश्चात्य विचार 'महानतम संख्या के महानतम भलाई' में अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक की समस्याओं के कीटाणु नीहित है, किन्तु सर्वोदय का विचार जैसा कि गीता में कहा गया है कि सब की भलाई में स्वतः अर्पित कर देना चाहिए। यह वास्तव में सत्य और अहिंसा के प्रति हमारी निरपेक्ष आस्था की मांग है।

संत विनोबा भावे ने अपनी सर्वोदय संबंधी विचारधारा को स्थापति करने के लिए इसकी तुलना संसार में प्रचलित तीन प्रमुख विचारधाराओं से की। प्रथम पूंजीवादी विचारधारा थी। जिसके अनुसार योग्यता वाले व्यक्ति को अधिक वेतन दिया जाए तथा कम योग्यता वाले को कम। इस व्यवस्था से केवल गिने चुने लोग ही अधिकाधिक संपत्ति पर आधिपत्य स्थापित कर लेते है और अधिकतर लोग निर्धन और अभाव का जीवन व्यतीत करने के लिए विवश होते है। ऐसी स्थिति समाज के लिए उचित नहीं कही जा सकती है।

द्वितीय विचारधारा लोकतंत्रिक समाजवाद पर आधारित विचारधारा है, जो एक व्यक्ति एक मत के सिद्धांत में विश्वास करती है। इसमें चुनाव में बहुमत प्राप्त करने वाले को ही विजयी माना जाता है। जिस कारण इसमें स्वाभाविक रूप से बहुसंख्यकों की रक्षा और अल्पसंख्यकों का दमन होता है। इसलिए विनोबा भावे इस व्यवस्था को भी वांछनीय नहीं मानते है।

तृतीय विचारधारा साम्यवादी विचारधारा है, जो वर्ग संघर्ष के सिद्धांत पर आधारित है। इसमें माना जाता है कि श्रमिक क्रांति के माध्यम से पूंजी के सभी साधनों पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लेगा। इस प्रकार, यह विचारधारा हिंसाक क्रांति का समर्थन करती है। किन्तु विनोबा भावे हिंसा प्रतिहिंसा में विश्वास नहीं करते। इसलिए उन्होंनें इस विचारधारा को भी समाज के लिए उपर्युक्त नहीं माना जा सकता।

निष्कर्ष

यह कहा जा सकता है कि अपनी सीमाओं के बावजूद "भूदान आंदोलन" गांधीवादी दर्शन के माध्यम से भूमि समस्याओं को हल करने का एक शानदार प्रयास था। और इसने प्रासंगिकता और महत्व के सामाजिक–आर्थिक–राजनीतिक क्रम के निर्माण में मदद की।

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ

1. भावे, विनोबा, भूदान –यज्ञ, सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1988, पृ. 4
2. भावे, विनोबा, सुलभ ग्रामदान, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी, 1968, पृ. 101
3. भावे, विनोबा, तीसरी शक्ति, नवजीवन ट्रस्ट, अहमदाबाद, 1961, पृ. 96
4. दीवान, कुन्दर बलवंत, जीवन –दृष्टि, ग्राम सेवा मण्डल, वरघा, म0 प्र0, 1946, पृ. 72
5. दीवान, कुन्दर बलवंत, अहिंसा की तलाश : विनोबा की जीवन –झांकी, कालिन्दी, नई दिल्ली, 1946, पृ. 89
6. नरगोलकर, वसंत, विनोबा के शब्दों में, कालिन्दी, नई दिल्ली, 1947, पृ. 64
7. नरगोलकर, वसंत, सर्वोदय यात्रा, भारत जैन महामण्डल, वर्धा, 1941, पृ. 93
8. दीवान, कुन्दर बलवंत, विनोबा के विचार, सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली, 1946, पृ. 72
9. भावे, विनोबा, गीता प्रवचन, अखिल भारत सर्व –सेवा संघ प्रकाशन, राजघाट, काशी, 1947, पृ. 141
10. वर्मा, रामगोपाल, विनोबा भावे, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2015, पृ. 56

11. विनोबा भावे, मूव्ड बाए लव : द मेमोरिज् ऑफ विनोबा भावे, ग्रीन बुक्स, नई दिल्ली, 1994, पृ. 132
12. नरगोलकर, वसंत, द क्रिड ऑफ संत विनोबा, भारतीय विद्या भवन, नई दिल्ली, 1995, पृ. 44
13. एस0 नारायणस्वामी, आर्चाय विनोबा भावे –ए बायोग्राफिकल (इम्मोरटल लाइटस् सर्वस्) सपना बुक हाऊस, बेंगलौर, 2000, पृ. 52
14. शर्मा, सी0 पी0 की पुस्तक विनोबा भावे : जीवन और दर्शन, अभिधा प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, पृ. 36
15. कुमार, सतीश, इंटीमेंट एण्ड द अनइंटीमेंट, ग्रीन बुक्स, नई दिल्ली, 1986, पृ. 154
16. देसाई, महादेव का विनोबा के विचार, सस्ता साहित्य मण्डल, प्रकाशन, 2008, पृ. 81,
17. बजाज, गौतम, विनोबा दर्शन, परंधाम प्रकाशन, पवनार, 2001, पृ. 62
18. बजाज, गौतम, आचार्य विनोबा भावे, पब्लिकेशन डिवीजन, मिनिस्ट्री ऑफ इनफोरमेशन एण्ड कम्युनिकेशन, नई दिल्ली, भारत सरकार 2004, पृ. 73
19. किशोर नन्द, विनोबा के उद्धरण :साहित्य –चिंतन पर एकाग्र, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली 2019, पृ. 85

Cite this Article-

'अंजन लकड़ा', "विनोबा भावे एवं भूदान आन्दोलन', Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal (RVIMJ), ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:2, Issue:08, August 2025.

DOI- 10.70650/rvimj.2025v2i800023

Published Date- 12 August 2025